अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है

प्रमाणों और चमत्कारों का विश्वकोश

मुहम्मद ﷺ की नुबूवत और क़ुरआन के सत्य होने के प्रमाण

वैज्ञानिक चमत्कार · ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य · पूरी हुई भविष्यवाणियाँ

तौरात और इंजील की शुभसूचनाएँ · जिन्न, जादू और अदृश्य का संसार

इतनी सरलता से समझाया कि बच्चा भी समझ ले · 151 रंगीन चित्र

151 प्रमाण, अपनी शक्ति के क्रम में

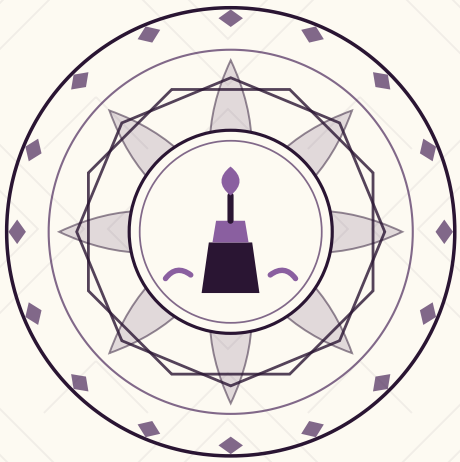

भाग पाँच

जिन्न, जादू और ग़ैब की दुनिया

एक वास्तविक संसार जिसकी ख़बर अल्लाह ने हमें दी, जिसकी गवाही हर क़ौम का इतिहास देता है, और जिसके प्रमाणित वाक़ियात नबी ﷺ के साथ, उनके साथियों के साथ, और हमारे अपने दिनों तक आम लोगों के साथ पेश आए।

18 प्रमाण

122 जिन्नों का एक गिरोह जिसने क़ुरआन सुना

कह दो: मेरी ओर वह्य की गई है कि जिन्नों के एक गिरोह ने सुना, और उन्होंने कहा: निस्सन्देह हमने एक अद्भुत क़ुरआन सुना, जो सही राह दिखाता है, और हम उस पर ईमान ले आए।

सूरह अल-जिन्न — आयतें 1-2

जिन्न एक उत्तरदायी सृष्टि हैं: उनमें मुसलमान भी हैं और उनमें इनकार करने वाले भी

सीधी-सादी बात में

जिन्न एक वास्तविक सृष्टि हैं जिन्हें अल्लाह ने आग से बनाया। हम उन्हें नहीं देखते और वे हमें देखते हैं। और क़ुरआन में **उन्हीं के नाम से एक पूरी सूरह** है, जो बताती है कि उनके एक गिरोह ने क़ुरआन सुना और उस पर ईमान ले आया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अरब जिन्नों को जानते थे और उनसे डरते थे; बल्कि उनमें से कुछ **उनकी पनाह माँगते**, उनकी पूजा करते और अपनी यात्राओं में उनसे सुरक्षा माँगते थे — और स्वयं यह सूरह इसे दर्ज करती है: "और मनुष्यों में से कुछ लोग जिन्नों में से कुछ की पनाह माँगते थे, तो उन्होंने उनका बोझ और बढ़ा दिया।" वे उन्हें ग़ैब का ज्ञान देते थे और उन्हीं से अपनी भविष्यवाणी लेते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

इस्लाम ने **न उनके अस्तित्व का इनकार किया न उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया** — उसने मामले को बारीकी से नियंत्रित किया: उसने उनके अस्तित्व की पुष्टि की एक ऐसी उत्तरदायी सृष्टि के रूप में जिसमें नेक भी हैं और बिगड़े हुए भी; उसने उनसे ग़ैब का ज्ञान निश्चित रूप से छीन लिया ("और हमने गुमान किया था कि मनुष्य और जिन्न अल्लाह के बारे में कभी झूठ नहीं कहेंगे", और "और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ कोई बुराई इरादा की गई है"); उसने **उनकी पनाह माँगने से रोका** और उसे शिर्क ठहराया; और उसने नजूमियों तथा भविष्यवक्ताओं के पास जाने से रोका। तो उसने वास्तविकता बनाए रखी और अन्धविश्वास तथा ग़ुलामी दोनों हटा दिए।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह **अपने आस-पास की हर चीज़ से अलग एक सन्तुलन** है। धर्म और संस्कृतियाँ या तो आत्माओं की दुनिया को ज्ञान और शक्ति का स्रोत बनाकर फुला देती हैं जिसकी पूजा और ख़ुशामद की जाए, या उसका बिलकुल इनकार करके उसे अन्धविश्वास ठहरा देती हैं। क़ुरआन ने एक तीसरा रास्ता लिया: **उसने अस्तित्व की पुष्टि की, पूजा मिटा दी, और ग़ैब के ज्ञान का इनकार किया**। यदि यह पाठ उस माहौल के किसी व्यक्ति ने गढ़ा होता, तो आसान रास्ता यही था कि वह उससे सहमत हो जाता जिसे लोग पहले से मानते थे और उसे अपने अधिकार के लिए इस्तेमाल करता — जैसा उससे पहले भविष्यवक्ता करते थे। इसके बजाय उसने भविष्यवाणी के पूरे व्यापार को ही ढा दिया, जो प्रायद्वीप की सबसे नफ़े वाली चीज़ों में था।

रचना का पदार्थ

123 बिना धुएँ की लपट से

उसने मनुष्य को ठीकरे जैसी मिट्टी से बनाया, और जिन्नों को बिना धुएँ की लपट से बनाया।

सूरह अर-रहमान — आयतें 14-15

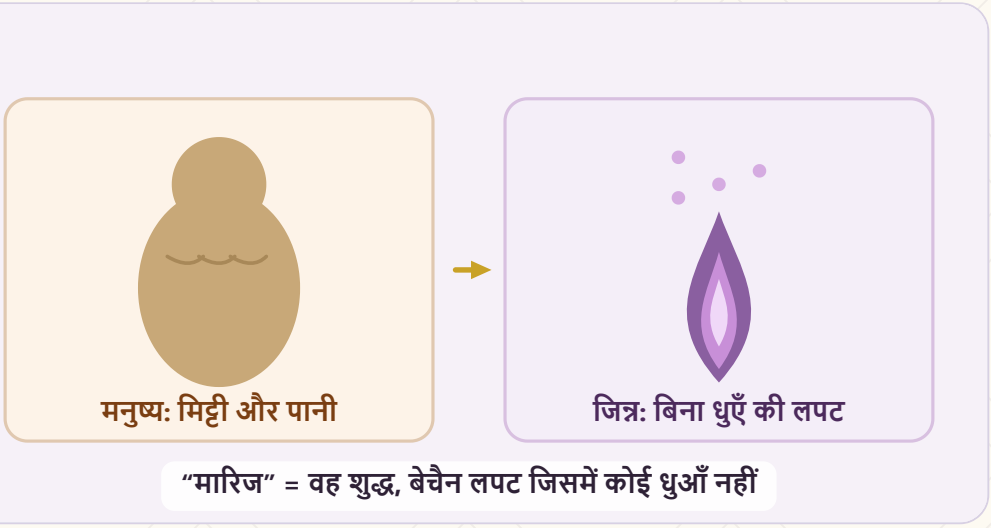

दो बिलकुल भिन्न पदार्थ — और इसीलिए एक दूसरे को नहीं देख सकता

सीधी-सादी बात में

हम **मिट्टी** से बने हैं, और जिन्न **शुद्ध, बेचैन आग** से जिसमें कोई धुआँ नहीं। और चूँकि पदार्थ भिन्न है, इसलिए आपकी आँख उन्हें पकड़ नहीं सकती — जबकि वे आपको देखते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जिन्नों के बारे में लोगों की धारणाएँ अनियंत्रित लोक-कल्पना थीं: भूत, प्रेत और डरावने आकार। उनकी रचना के पदार्थ की कोई परिभाषा न थी और न इसका कोई स्पष्टीकरण कि वे दिखाई क्यों नहीं देते। और यहाँ जो अरबी शब्द आया है वह एक सूक्ष्म पारिभाषिक शब्द है जो कम ही इस्तेमाल होता है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

अरबी शब्दकोशों में **मारिज** वह शुद्ध, घुली-मिली, बेचैन लपट है जिसमें कोई धुआँ नहीं। और यह ऊर्जा के किसी विशेष रूप का वर्णन है, किसी सघन भौतिक पिंड का नहीं। और आज विज्ञान मानता है कि **मानव आँख जो देखती है वह विद्युतचुम्बकीय वर्णक्रम के एक बहुत छोटे हिस्से** से आगे नहीं जाती (लगभग 400-700 नैनोमीटर), और यह कि ब्रह्मांड का लगभग 95% पदार्थ तथा ऊर्जा "श्याम" है, अदृश्य, और केवल अपने प्रभावों से ही पकड़ में आती है। तो ऐसे संसारों का अस्तित्व जिन तक हमारी इन्द्रियाँ नहीं पहुँचतीं, आज के वैज्ञानिक मन के लिए कोई अजनबी बात नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

क़ुरआन ने उनके न दिखाई देने का एक स्पष्ट कारण भी बताया, और वह अत्यन्त सूक्ष्म है: "**निस्सन्देह वह और उसका क़बीला तुम्हें वहाँ से देखते हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते**।" देखना एक ही दिशा में है, दोनों में नहीं — और इसके लिए **स्वयं बोध की प्रकृति** में अन्तर चाहिए, केवल छिप जाना या ओट में हो जाना नहीं। और रचना के दो पदार्थों के बीच का भेद क्षमताओं के अन्तर को समझा देता है: गति, भेदन, और रूप का बदलना। यह एक **आदि से अन्त तक भीतर से सुसंगत** व्याख्या है, न कि क़ौमों की किंवदन्तियों जैसी बिखरी हुई तस्वीरें।

124 जादू स्वयं नबी ﷺ पर चला

रसूलुल्लाह ﷺ पर जादू किया गया, यहाँ तक कि उन्हें लगता कि उन्होंने कोई काम किया है जबकि उन्होंने नहीं किया ... एक कंघी में, कंघी से निकले बालों में और नर खजूर के गाभ में, और वह ज़रवान के कुएँ में था।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

मदीना का ज़रवान कुआँ — वह जगह जहाँ से जादू निकाला गया

सीधी-सादी बात में

जादू एक वास्तविक चीज़ है जिसका असर होता है, कोई कल्पना या भ्रम नहीं। और इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण यह है कि **वह स्वयं नबी ﷺ पर हुआ**, यहाँ तक कि उन्हें लगता कि उन्होंने कोई काम किया है जबकि किया न होता — जब तक अल्लाह ने उन्हें उसकी जगह न बता दी और वह निकाल न लिया गया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जादू इस क्षेत्र की हर सभ्यता में एक जाना-माना और फलता-फूलता पेशा था: बाबुल, मिस्र, यमन और अरब। जादूगर हैसियत, दौलत और प्रभाव वाला आदमी होता था। और नबी ﷺ के लिए यह छिपा लेना आसान था कि उन पर क्या बीता — क्योंकि किसी व्यक्ति की दावत को इससे बढ़कर कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचाती कि यह कहा जाए कि उस तक जादू पहुँच गया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम** में आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से है, और वह भी सूक्ष्म ब्योरों के साथ: जादूगर का नाम (लबीद बिन अल-आसम), जादू की सामग्री (कंघी, बाल और खजूर के गाभ का ग़िलाफ़), उसकी जगह (ज़रवान का कुआँ), उसके असर का वर्णन, और उसे कैसे निकाला गया। **अहले-सुन्नत इस पर एकमत हैं कि जादू की एक वास्तविकता और एक असर है**, और यह कि उसके असर ने न वह्य को छुआ न सन्देश पहुँचाने को — केवल उनके अपने दुनियावी मामलों को। और यह एक महत्वपूर्ण शर्त है जिसे विद्वानों ने बताया, क्योंकि सन्देश पहुँचाने में सुरक्षा अटूट है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

प्रमाण यहाँ एक दुर्लभ क़िस्म का है: **ऐसी ख़बर जिसका बाहरी अर्थ दावत लाने वाले को हानि पहुँचाता है, और जो फिर भी पहुँचाई और सुरक्षित रखी गई**। नबी ﷺ ने उसे छिपाया नहीं, उनके साथियों ने उसे दबाया नहीं, और हदीस के विद्वानों ने उसे मिटाया नहीं — बल्कि मुसलमानों की दोनों सबसे सहीह किताबों ने उसे दर्ज किया। और जो कोई धर्म गढ़ रहा हो वह अपने बारे में यह रिवायत नहीं करता कि किसी यहूदी का जादू उस पर चल गया। इसे ऐतिहासिक आलोचक **शर्मिन्दगी की कसौटी** कहते हैं: वह रिवायत जो अपने रावी को हानि पहुँचाती है उससे अधिक सत्य के निकट होती है जो उसे लाभ पहुँचाती है। और इस घटना का एक स्थायी फल भी निकला: **मुअव्विज़तैन**, यानी हर मुसलमान के लिए आज तक एक व्यावहारिक उपाय।

एक व्यावहारिक उपाय

125 मुअव्विज़तैन — हर मुसलमान का क़िला

कह दो: मैं पौ फटने के रब की पनाह माँगता हूँ उस हर चीज़ की बुराई से जो उसने बनाई ... और गाँठों में फूँकने वालियों की बुराई से, और ईर्ष्या करने वाले की बुराई से जब वह ईर्ष्या करे।

सूरह अल-फ़लक़ — आयतें 1-5

दो सूरतें जो जादू और ईर्ष्या की बुराई से रक्षा के लिए उतारी गईं

सीधी-सादी बात में

जब जादू हुआ तो लोगों को बिना किसी उपाय के नहीं छोड़ा गया। दो छोटी सूरतें उतारी गईं — **अल-फ़लक़ और अन-नास** — जिनमें जादू से, ईर्ष्या से और शैतान के वसवसे से रक्षा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जब लोगों पर जादू होता तो वे उसे तोड़ने के लिए किसी दूसरे जादूगर की शरण लेते — यानी बुराई का इलाज उस जैसी ही बुराई से करते, और इस तरह जादूगरों से और अधिक चिपकते और उन्हें और अधिक देते। यही वह चक्र था जो भविष्यवक्ताओं और जादूगरों की रोज़ी चलाता था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

नबी ﷺ हर रात सोने से पहले ये दोनों सूरतें अपने ऊपर पढ़ते, अपनी हथेलियों में फूँकते और उनसे अपना शरीर पोंछते थे, और वे बीमारों पर भी उन्हें पढ़ते थे (बुख़ारी और मुस्लिम)। उन्होंने उक़्बा बिन आमिर को हुक्म दिया कि उन्हें **हर नमाज़ के बाद** पढ़ें, और उनसे कहा: "पनाह माँगने वालों ने इन जैसी किसी चीज़ से कभी पनाह नहीं माँगी।" और सहीह हदीस में है: "जो अपने बिस्तर पर जाते समय आयतुल-कुर्सी पढ़े, उस पर अल्लाह की ओर से एक निगरान बना रहता है और सुबह तक कोई शैतान उसके पास नहीं आता।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ध्यान दीजिए कि इस उपाय ने पूरे सामाजिक ढाँचे के साथ क्या किया। उसने जादू से रक्षा **सीधे हर व्यक्ति के अपने हाथ में** दे दी: छोटे-से शब्द जिन्हें एक बच्चा याद कर लेता है, बिना किसी बिचौलिए के, बिना किसी फ़ीस के और बिना किसी अनुष्ठान के। और इस तरह उसने जादूगरों तथा भविष्यवक्ताओं का अधिकार और उनका व्यापार जड़ से मिटा दिया। और यह वह नहीं करता जो लोगों पर अधिकार चाहता हो — वह तो इसका उलटा करता है। और सूरह की सबसे सूक्ष्म बात: "**गाँठों में फूँकने वालियाँ**" — यानी जादू के सबसे आम व्यावहारिक रूप का वर्णन: एक गाँठ बाँधना और उस पर फूँकना। और ठीक यही लबीद बिन अल-आसम के जादू में मिला: एक डोरी में ग्यारह गाँठें।

पुरातात्विक गवाही

126 बाबुल — और इतिहास की सबसे पुरानी जादू-पट्टिकाएँ

और उन्होंने उसके पीछे चलना शुरू किया जो शैतान सुलैमान के राज्य में पढ़ते थे। और सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया, बल्कि शैतानों ने कुफ़्र किया, जो लोगों को जादू सिखाते थे और वह भी जो बाबुल में दो फ़रिश्तों पर उतारा गया था।

सूरह अल-बक़रह — आयत 102

ईसा से एक हज़ार से भी अधिक वर्ष पहले लिखे मंत्र और तावीज़

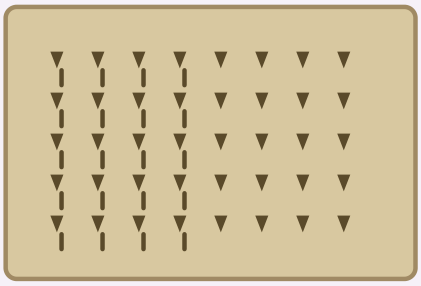

बाबुल की कीलाक्षर मिट्टी-पट्टिकाएँ — संग्रहालयों में सुरक्षित

इराक़ की उसी भूमि से जादुई पाठों के पूरे पुस्तकालय निकले

सीधी-सादी बात में

क़ुरआन ने जादू को एक विशेष जगह से जोड़ा: **बाबुल**। और पुरातत्वविदों ने ठीक उसी भूमि से **प्राचीन संसार का सबसे बड़ा जादुई पाठ-संग्रह** निकाला।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जब क़ुरआन उतरा तो बाबुल उजड़ा हुआ और भुला दिया गया था, और सदियों से वीरान पड़ा था। और कोई कीलाक्षर लिपि पढ़ नहीं सकता था — वह पूरी तरह मर चुकी थी। तो जादू की शिक्षा को दुनिया की सारी राजधानियों में से **ख़ास तौर पर बाबुल** से जोड़ देना एक भौगोलिक और ऐतिहासिक निर्धारण है जो परीक्षा के लिए खुला है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

कीलाक्षर लिपि उन्नीसवीं सदी में पढ़ी गई। तब सामने आया कि मेसोपोटामिया — जिसके हृदय में बाबुल था — **प्राचीन संसार का जादू, मंत्र और तावीज़ों का सबसे बड़ा केन्द्र** था। सबसे प्रसिद्ध खोजों में पट्टिकाओं की वह शृंखला है जिसे **मक़्लू** कहते हैं, जो जादू और उसके तोड़ पर नौ पूरी पट्टिकाएँ हैं, और शुर्पू, और मंत्रों, ज्योतिष तथा भविष्यकथन की हज़ारों पट्टिकाएँ। अकेले अशुरबनिपाल के पुस्तकालय में उनमें से सैकड़ों थीं। और इतिहासकार स्वीकार करते हैं कि बाबुल ही वह स्रोत था जहाँ से ये कलाएँ पूरे क्षेत्र में फैलीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भौगोलिक निर्धारण ही दलील का बिन्दु है। क़ुरआन ने केवल यह नहीं कहा "उन्होंने जादू सीखा" — उसने **उस देश का नाम लिया जहाँ से वह निकला**। और बारह सदी बाद वह देश जादुई पाठों के लिए धरती का सबसे समृद्ध पुरातात्विक स्थल सिद्ध हुआ। और इससे भी सूक्ष्म है **सुलैमान अलैहिस्सलाम को बरी करना**: "और सुलैमान ने कुफ़्र नहीं किया।" उस क्षेत्र में प्रचलित किंवदन्तियाँ — और बाद के यहूदी पाठ — जादू को सुलैमान से जोड़ती थीं और उन्हें जादूगरों का उस्ताद बनाती थीं। तो क़ुरआन आया **एक नबी को उससे बरी करता हुआ जो स्वयं अहले-किताब ने उनसे जोड़ रखा था** — उसका ठीक उलटा जो कोई उनसे उधार लेने वाला करता।

127 फ़िरऔन के जादूगर — और वे रस्सियाँ जो दौड़ती हुई लगीं

उसने कहा: बल्कि तुम्हीं डालो। तो अचानक उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ उनके जादू से उसे ऐसी लगीं मानो दौड़ रही हों।

सूरह ता-हा — आयत 66

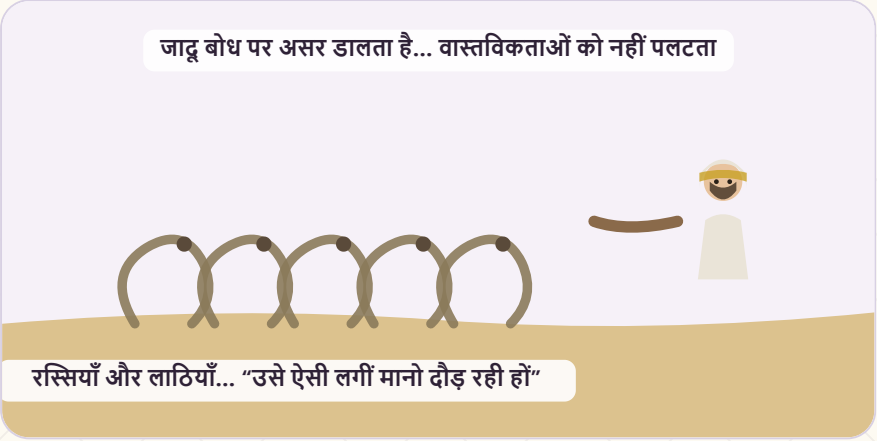

क़ुरआन जादू को आँख पर पड़ने वाला असर बताता है, कोई नई रचना नहीं

सीधी-सादी बात में

फ़िरऔन के जादूगर रस्सियाँ और लाठियाँ लेकर आए, और वे लोगों को **दौड़ते हुए साँप** दिखाई दीं। और शब्दों की बारीकी पर ध्यान दीजिए: "**उसे ऐसी लगीं**" — यानी वे बदलीं नहीं; देखने वाले का बोध प्रभावित हुआ।

उस समय लोग क्या मानते थे?

प्राचीन मिस्र में जादू अपने वैभव के चरम पर था, अपने पुरोहितों, अपने विद्यालयों और अपने दर्ज पाठों के साथ। और यह माना जाता था कि जादूगर **चीज़ों को सचमुच बदल देता है**: लाठी को साँप में और आदमी को जानवर में। और यह धारणा धरती की लगभग हर सभ्यता में छाई हुई थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

क़ुरआन ने इस धारणा का स्पष्ट खंडन किया और जादू के असर को तीन दायरों तक सीमित कर दिया: **बोध और इन्द्रियों पर असर** ("उसे ऐसी लगीं", "उन्होंने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया"), **मनों और रिश्तों पर असर** ("वे उनसे वह सीखते हैं जिससे वे पति और पत्नी के बीच जुदाई डालते हैं"), और **शरीर पर हानि के रूप में असर**। रहा **चीज़ों की वास्तविकता बदल देना**, तो उसका सीधा इनकार है। और यह उससे मेल खाता है जो आज मनोविज्ञान सुझाव, सम्मोहन और सामूहिक भ्रान्त-बोध के बारे में सिद्ध करता है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

बोध पर असर और **वास्तविकता में बदलाव** के बीच का भेद अत्यन्त सूक्ष्म है, और उस समय की संस्कृति उसे जानती ही न थी। और यही जादू पर इस्लामी रुख़ को अपने चारों ओर की हर चीज़ से अलग करता है: न तो कोई ऐसा पूर्ण इनकार जो अवलोकन को झुठला दे, न ऐसी कोई छूट कि जादूगर रचता और बदलता है। और मूसा के अपने चमत्कार में अन्तर पर ध्यान दीजिए: उनकी लाठी ने उनके बनाए को **निगल लिया** — एक वास्तविक निगलना। तो क़ुरआन में चमत्कार और जादू के बीच अन्तर यह है: **पहला वास्तविकता में बदलाव है, दूसरा आँख में**। और इसीलिए स्वयं जादूगर सबसे पहले ईमान लाए — क्योंकि वे अपनी ही कला की सीमाएँ सबसे अच्छी तरह जानते थे।

एक स्थापित घटना

128 वह शैतान जो तीन रातें अबू हुरैरा के पास आया

उसने कहा: मुझे छोड़ दो और मैं तुम्हें ऐसे शब्द सिखाऊँगा जिनसे अल्लाह तुम्हें लाभ देगा ... जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो आयतुल-कुर्सी पढ़ो ... नबी ﷺ ने कहा: उसने तुमसे सच कहा, हालाँकि वह झूठा है। वह एक शैतान था।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

रमज़ान के सदक़े के भंडार में तीन रातें दोहराई गई एक घटना

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने अबू हुरैरा को सदक़े का खाना पहरे में देने की ज़िम्मेदारी दी। कोई रात में उसमें से चोरी करने आया, और उन्होंने उसे लगातार तीन रातें पकड़ा। आख़िरी रात उस आदमी ने उन्हें **आयतुल-कुर्सी** सिखाई और कहा: यदि तुम इसे पढ़ोगे तो कोई शैतान तुम्हारे पास नहीं आएगा। फिर नबी ﷺ ने उन्हें बताया कि वह एक शैतान था।

उस समय लोग क्या मानते थे?

रात में खाने के भंडार पर पहरा देना एक साधारण बात है। अबू हुरैरा ने पहली बार उसे एक ग़रीब आदमी समझा, उस पर तरस खाया और छोड़ दिया। फिर यह तीन बार हुआ — और हर सुबह वे नबी ﷺ को बताते, और वे उनसे कहते: "**वह फिर आएगा**" — और वह फिर आया।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह घटना पूरी की पूरी **सहीह बुख़ारी** में है, आयतुल-कुर्सी की फ़ज़ीलत के अध्याय में। उसमें तीन महत्वपूर्ण बिन्दु हैं। पहला, कि नबी ﷺ ने **हर सुबह अबू हुरैरा को बता दिया कि वह आदमी उसी रात लौटेगा** — और वह लौटा। दूसरा, कि अन्तिम फ़ैसला एक अत्यन्त सूक्ष्म वाक्य में आया: "**उसने तुमसे सच कहा, हालाँकि वह झूठा है**" — यानी सूचना सही है हालाँकि कहने वाला स्वभाव से झूठा है। तीसरा, कि व्यावहारिक परिणाम **हर मुसलमान के लिए एक हथियार** बना: सोते समय आयतुल-कुर्सी।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस घटना की सबसे महत्वपूर्ण बात वह **तरीक़ा** है जो नबी ﷺ ने इस दुनिया से निपटने के लिए सिखाया। उन्होंने न घटना का इनकार किया न उसे डरावना बनाया; उन्होंने **सूचना को उसकी अपनी योग्यता पर परखा, उसके कहने वाले से नहीं**। और वाक्य "उसने तुमसे सच कहा हालाँकि वह झूठा है" ख़बरों की आलोचना का एक पूरा नियम है। फिर ध्यान दीजिए कि परिणाम **क़ुरआन की एक आयत** निकला जिसे हर कोई याद कर लेता है, न कोई अनुष्ठान, न कोई ताबीज़, न कोई मानवीय बिचौलिया। पूरी घटना इस पर ख़त्म होती है कि साधारण व्यक्ति स्वयं अपनी रक्षा कर सके — और यही वह धागा है जो इस पूरे भाग में हर चीज़ में चल रहा है।

साथी

129 हर मनुष्य के साथ एक साथी है

तुममें से कोई ऐसा नहीं जिसके साथ जिन्नों में से उसका साथी न लगा दिया गया हो। उन्होंने कहा: और आपके साथ भी, ऐ अल्लाह के रसूल? उन्होंने कहा: और मेरे साथ भी, सिवाय इसके कि अल्लाह ने उसके मुक़ाबले में मेरी मदद की और वह मुसलमान हो गया, तो वह मुझे केवल भलाई का ही हुक्म देता है।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

भीतरी संघर्ष की एक ऐसी व्याख्या जो बुरे ख़्यालों को उनकी सही जगह पर रख देती है

सीधी-सादी बात में

हर मनुष्य के साथ **जिन्नों में से एक साथी** है जो उसे बुराई का वसवसा डालता है। और यह उन बुरे ख़्यालों को समझा देता है जो आपके मन में अचानक आ जाते हैं, जिन्हें आप न चाहते हैं न क़बूल करते हैं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

लोग या तो हर गुज़रते ख़्याल को अपने ही ऊपर डाल लेते और आत्म-भर्त्सना में डूब जाते, या अपने सारे कामों को बाहरी शक्तियों पर डालकर ज़िम्मेदारी ही गिरा देते। ख़्याल और कर्म के बीच भेद करने वाली कोई नियंत्रित व्याख्या थी ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

नबी ﷺ ने इस वास्तविकता की पुष्टि की और फिर **उसे अत्यन्त महत्वपूर्ण शर्तों से बाँध दिया**: कि साथी **वसवसा डालता है, मजबूर नहीं करता**; कि व्यक्ति **किसी गुज़रते ख़्याल पर पकड़ा नहीं जाता जब तक वह उस पर अमल न करे** ("अल्लाह ने मेरी उम्मत को उससे माफ़ कर दिया जो उनके मन कहते हैं, जब तक वे अमल या बात न करें"); और कि वसवसे की तीव्रता **ईमान की निशानी है, बिगाड़ की नहीं** — जब सहाबा ने उस वसवसे की शिकायत की जो वे पाते थे तो उन्होंने कहा: "**यह तो खुला ईमान है**", यानी उससे तुम्हारा घबरा जाना ही इस बात का प्रमाण है कि तुम्हारे दिल सही-सलामत हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस धारणा के मनोवैज्ञानिक असर को देखिए, और उसकी तुलना आज बहुत-से लोगों की हालत से कीजिए। जिसके मन में कोई घिनौना ख़्याल आ जाए और वह समझे कि वह उसकी अपनी सच्ची गहराइयों से आया है, वह अपने ही से डरने लगता है — और **धार्मिक विषयों वाले मनोग्रस्ति-बाध्यता विकार** में ठीक यही होता है। यह व्याख्या **जो तुम पर डाला जाता है** उसे **जो तुम चुनते हो** उससे अलग कर देती है, और फ़ैसला देती है कि पहले पर तुमसे हिसाब नहीं — बल्कि उससे तुम्हारी नफ़रत ही तुम्हारे सही-सलामत होने का प्रमाण है। फिर वह व्यावहारिक उपाय भी देती है: पनाह माँगो और रुक जाओ, और उससे बहस करते मत रहो। और यह उसके बहुत निकट है जो आधुनिक मनोवैज्ञानिक उपचार घुसपैठिए ख़्यालों के लिए सुझाते हैं: उनसे बहस करके मत लड़ो, और अपनी पहचान उनसे मत गढ़ो।

130

ख़ून का बहाव

वह आदम की सन्तान में ख़ून की तरह दौड़ता है

निस्सन्देह शैतान आदम की सन्तान में ख़ून की तरह दौड़ता है।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

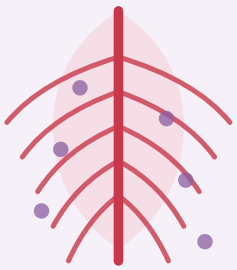

शरीर में कोई जगह ऐसी नहीं जो उसकी पहुँच से दूर हो

"ख़ून का बहाव" — सम्भव सबसे व्यापक उपमा

ख़ून बिना किसी अपवाद के शरीर की हर कोशिका तक पहुँचता है

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ ने किसी व्यक्ति के भीतर शैतान की पहुँच को **ख़ून के दौड़ने जैसा** बताया — यानी वह तुममें हर जगह पहुँचता है, और कोई अंग उससे ख़ाली नहीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

रक्त-परिसंचरण ज्ञात ही न था। प्रचलित धारणा — जालीनूस का सिद्धान्त, जिसने पन्द्रह सौ वर्ष चिकित्सा पर राज किया — यह थी कि ख़ून यकृत में बनता है और सिरों पर ख़र्च हो जाता है, न कि यह कि वह **एक पूरा चक्कर लगाता** है, शरीर के हर हिस्से तक पहुँचता और लौट आता है। और यह 1628 तक खोजा नहीं गया था, विलियम हार्वे के हाथों, और 1661 में केशिकाओं की खोज से पूरा हुआ।

आज विज्ञान क्या कहता है?

परिसंचरण तंत्र केशिकाओं के ऐसे जाल के ज़रिये **शरीर की हर कोशिका** तक पहुँचता है जिसकी कुल लम्बाई लगभग एक लाख किलोमीटर है। शरीर में कोई जीवित ऊतक ऐसा नहीं जहाँ ख़ून न पहुँचे। तो पूर्ण, सर्वव्यापी भेदन की तस्वीर के लिए "ख़ून के दौड़ने" को चुनना **समूचे शरीर में सम्भव सबसे सूक्ष्म उपमा** है — और उसकी बारीकी की हद तब तक समझ में नहीं आती जब तक परिसंचरण न जान लिया जाए।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह उपमा यूँ ही नहीं चुनी गई होगी। यदि केवल निकटता अभिप्रेत होती तो कहा जाता "छाया की तरह" या "साँस की तरह" — और ये दोनों उस युग की धारणाओं के अधिक निकट हैं। पर अभिप्रेत था **सर्वव्यापकता और हर हिस्से तक भेदन**, और शरीर में यह गुण अकेले ख़ून में ही साकार होता है — एक ऐसा गुण जो दस सदी बाद तक ज्ञात ही न था। और उस व्यावहारिक उपयोग पर ध्यान दीजिए जो नबी ﷺ ने इस पर खड़ा किया: उन्होंने यह तब कहा जब वे रात में सफ़िया को मस्जिद से बाहर ले जा रहे थे, और दो आदमी गुज़रे और जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गए, तो उन्होंने उन्हें रोककर कहा: "ठहरो; यह सफ़िया बिन्त हुयय है।" यानी उन्होंने उस नियम को **बुरे गुमान के उठने से पहले ही उसे अपने से हटाने** का कारण बना दिया — यह डर का नहीं, पारदर्शिता का सबक़ है।

131 नज़र सच है — एक घटना जिसके गवाह सहाबा बने

नज़र सच है, और यदि कोई चीज़ तक़दीर से आगे निकल सकती तो नज़र निकल जाती। और जब तुमसे धोने को कहा जाए तो धो दो।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

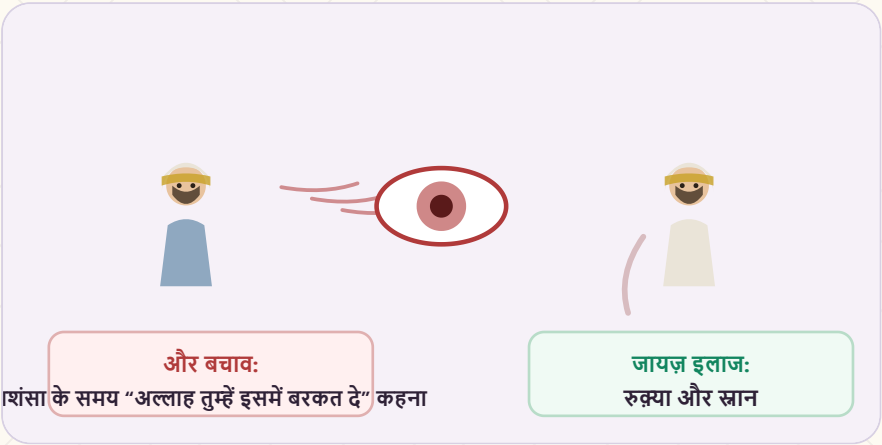

सहल बिन हुनैफ़ और आमिर बिन रबीआ की घटना — मालिक, अहमद और नसाई की रिवायत

सीधी-सादी बात में

"नज़र सच है" — यानी प्रशंसा या ईर्ष्या की एक निगाह सचमुच हानि पहुँचा सकती है। और मामला बिना किसी उपाय के नहीं छोड़ा गया: **पढ़ना और धोना**, और बचाव यह कि प्रशंसा करने वाला जब कोई चीज़ उसे भाए तो बरकत की दुआ कर दे।

उस समय लोग क्या मानते थे?

नज़र से अरब और दूसरे लोग डरते थे, और उसे ताबीज़ों, मनकों, तावीज़ों तथा हड्डियाँ और जानवरों की आँखें लटकाकर रोकते थे। यानी वे एक धारणा का सामना दूसरे अन्धविश्वास से करते थे, और उसकी क़ीमत चुकाते थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

प्रसिद्ध घटना मालिक ने मुवत्ता में और अहमद तथा नसाई ने रिवायत की: **सहल बिन हुनैफ़** ने स्नान किया, और **आमिर बिन रबीआ** ने उन्हें देखा और कहा: "मैंने आज जैसा कभी नहीं देखा, और न किसी परदानशीं कुँवारी की खाल" — और सहल वहीं बीमार पड़ गए। नबी ﷺ को बताया गया तो उन्होंने कहा: "**तुममें से कोई अपने भाई को क्यों मार डालता है? तुमने बरकत की दुआ क्यों न की?**" फिर उन्होंने आमिर को वुज़ू करने का हुक्म दिया और वह पानी सहल पर उँडेला गया — और सहल भले-चंगे उठ खड़े हुए। और यह सब **एक सफ़र में सहाबा के एक गिरोह की आँखों के सामने** हुआ।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस घटना में तीन बातें ठहरने योग्य हैं। पहली, कि **जिससे यह हुआ वह नफ़रत से भरा कोई ईर्ष्यालु न था** बल्कि मुहब्बत से भरा एक प्रशंसक था — और यह उस आम धारणा को उलट देता है कि नज़र केवल किसी दुश्मन से लगती है। दूसरी, कि उपाय **उसकी ओर से था जिससे यह हुआ, उसकी ओर से नहीं जिस पर पड़ी** — प्रशंसक धोता है और वह पानी पीड़ित पर उँडेला जाता है। और यह उन सारे अनुष्ठानों का उलटा है जो ताबीज़ पीड़ित पर बाँधते थे। तीसरी, और सबसे महत्वपूर्ण: कि नबी ﷺ ने **ताबीज़ों की सीधी मनाही की** ("जिसने ताबीज़ लटकाया उसने शिर्क किया") और उसकी जगह एक सरल, मुफ़्त, व्यावहारिक विकल्प दिया। तो उन्होंने परिघटना की पुष्टि की और उससे जुड़ा अन्धविश्वास एक ही साथ मिटा दिया — और यही इस पूरे भाग का नमूना है।

एक स्थापित अधीनता

132 सुलैमान और उनके अधीन किए गए जिन्न

और शैतानों में से वे भी थे जो उनके लिए गोता लगाते थे और इसके सिवा दूसरे काम भी करते थे। और हम ही उन पर निगरान थे।

सूरह अल-अंबिया — आयत 82

निश्चित, सीमित काम: गोता लगाना, मोती निकालना, और निर्माण करना

सीधी-सादी बात में

अल्लाह ने सुलैमान अलैहिस्सलाम के अधीन जिन्नों का एक गिरोह कर दिया जो उनके लिए काम करता था: **वे समुद्र में गोता लगाते थे और इमारतें बनाते थे**। यह अकेले उन्हीं का ख़ास चमत्कार है, और उन्होंने अपने रब से माँगा कि यह उनके बाद किसी को न मिले।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उस क्षेत्र में प्रचलित किंवदन्तियाँ सुलैमान से जादू और शब्दों तथा तिलिस्मों के ज़रिये आत्माओं पर नियंत्रण जोड़ती थीं, जो जादूगरों को विरासत में मिलता। लोग इस विषय पर उनकी ओर मंसूब की गई किताबें फैलाते थे — और वे सब गढ़ी हुई और झूठी थीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

क़ुरआन ने मामले को कड़ी शर्तों से नियंत्रित किया। पहली, कि यह अधीनता **केवल अल्लाह की इजाज़त से** थी, किसी जादुई ज्ञान से नहीं: "और जिन्नों में से वे भी थे जो **उनके रब की इजाज़त से** उनके सामने काम करते थे"। दूसरी, कि काम **भौतिक और सीमित** थे: गोता लगाना, निर्माण और ढोना — न ग़ैब का कोई ज्ञान न तक़दीर पर कोई नियंत्रण। तीसरी — और सबसे स्पष्ट — कि क़ुरआन ने स्वयं इसी कहानी के भीतर **जिन्नों का ग़ैब से अनजान होना** बता दिया: वे सुलैमान के देहान्त के बाद भी काम करते रहे जबकि वे अपनी लाठी पर टिके हुए थे, और उन्हें पता ही न चला कि उनका देहान्त हो गया, "और जब वे गिरे तो जिन्नों पर स्पष्ट हो गया कि यदि वे ग़ैब जानते होते तो इस अपमानित करने वाली यातना में न पड़े रहते"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस विलक्षण विरोधाभास को देखिए: जो कहानी जिन्नों को काम में लाने का सबसे बड़ा विज्ञापन बन सकती थी उसे **उनके ग़ैब न जान सकने का निर्णायक प्रमाण** बना दिया गया। वे जिन्न जो गोता लगाते और इमारतें बनाते थे, उन्हें यह तक पता न चला कि उनके सामने खड़ा व्यक्ति मर चुका है! यदि यह पाठ मानवीय होता, ऐसे माहौल में जो भविष्यकथन को ऊँचा उठाता था, तो वह उसी आयत में अपने ही हाथों अपनी किंवदन्ती न ढाता। और फिर सुलैमान ने दुआ की: "**और मुझे ऐसा राज्य दे जो मेरे बाद किसी को न मिले**" — तो हर उस व्यक्ति पर दरवाज़ा सदा के लिए बन्द हो गया जो बाद में जिन्नों पर हुक्म चलाने का दावा करे। जिस कहानी का हवाला जादूगर देते हैं वह सच में उनके दावे को ढाने वाली सबसे प्रबल चीज़ है।

133 नुबूवत के बाद भविष्यकथन क्यों रुक गया?

और हमने आकाश को टटोला तो उसे कड़े पहरेदारों और जलते हुए शोलों से भरा पाया। और हम उसमें सुनने की जगहों पर बैठा करते थे, पर अब जो कोई सुनने की कोशिश करे वह अपने लिए ताक में बैठा एक जलता शोला पाएगा।

सूरह अल-जिन्न — आयतें 8-9

एक स्पष्ट सामाजिक घटना: नुबूवत के आरम्भ में भविष्यकथन का ढह जाना

सीधी-सादी बात में

भविष्यवक्ता ऐसी बातें बताते थे जो कभी-कभी सच निकलतीं, क्योंकि शैतान आकाश की ख़बरों में से कुछ सुन लेते और उनके कानों में डाल देते। जब नबी ﷺ भेजे गए तो **उन्हें इससे रोक दिया गया**, तो उनका स्रोत कट गया और उनका पेशा ढह गया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

भविष्यकथन प्रायद्वीप में एक पूरी सामाजिक संस्था थी: भविष्यवक्ता की हैसियत, दौलत और अधिकार होता था, झगड़ों में उसकी शरण ली जाती थी और छिपी चीज़ों के बारे में उससे पूछा जाता था। सबसे प्रसिद्धों में सतीह, शिक़्क़ और सवाद थे। और उनकी कभी-कभार की सटीकता ही उनकी हैसियत बचाए रखती थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ऐतिहासिक स्रोत और सीरतें दर्ज करती हैं कि स्वयं भविष्यवक्ताओं ने **शिकायत की कि उनसे ख़बरें कट गई हैं** — नबी ﷺ के भेजे जाने पर — और उनमें से बहुतों ने अपने लोगों को यह बताया; बल्कि यह उनमें से कुछ के इस्लाम क़बूल करने के कारणों में था। और यह ऐतिहासिक रूप से देखा जा सकता है कि **पुराने अर्थ में भविष्यकथन इस्लाम के बाद प्रायद्वीप से लगभग पूरी तरह लुप्त हो गया**, जबकि वह सामाजिक जीवन का एक स्तम्भ था। और इसकी क्रियाविधि दोनों सहीह संग्रहों में स्थापित है: "तो वह उसे अपने से नीचे वाले के कान में डालता है... और वे उसके साथ सौ झूठ मिला देते हैं"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

नबी ﷺ मनाही पर नहीं रुके; उन्होंने **परिघटना का भेद ऐसे खोला कि वह भीतर से ही ढह जाए**। उनसे भविष्यवक्ताओं के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा: "वे कुछ भी नहीं।" लोगों ने कहा: पर वे कभी-कभी हमें ऐसी बात बताते हैं जो सच निकलती है। उन्होंने ﷺ कहा: "**सच्चाई का वह एक शब्द जिन्न उचक लेता है और अपने दोस्त के कान में टपका देता है, और वे उसके साथ सौ झूठ मिला देते हैं।**" और यह उसकी अत्यन्त सूक्ष्म व्याख्या है जिसे आज मनोविज्ञान **पुष्टिकरण-पक्षपात** कहता है: लोग एक निशाने पर बैठी बात याद रखते हैं और सौ चूकें भूल जाते हैं। तो उन्होंने भविष्यकथन को नंगे इनकार से नहीं, बल्कि उस सांख्यिकीय क्रियाविधि को नंगा करके मिटाया जिस पर वह टिका है — और यही वह दलील है जो आज विज्ञान ज्योतिष तथा भविष्यकथन के विरुद्ध देता है।

सहाबा के बीच की घटनाएँ

134 ऐ सारिया... पहाड़!

उमर ने मिम्बर पर होते हुए पुकारा: ऐ सारिया, पहाड़! ... सन्देशवाहक ने कहा: हमने उमर की आवाज़ सुनी, तो हमने अपनी पीठ पहाड़ की ओर कर ली, और अल्लाह ने हमें विजय दी।

बैहक़ी, इब्न असाकिर और अन्य की रिवायत — कई विद्वानों ने हसन ठहराया

आवाज़ पहुँच गई... और लौटने पर सेना ने उसकी पुष्टि की

एक करामत जिसे ताबिईन ने रिवायत किया और विद्वानों ने अपनी किताबों में आगे पहुँचाया

सीधी-सादी बात में

जब उमर बिन ख़त्ताब मदीना में जुमे का ख़ुतबा दे रहे थे, तो अचानक पुकार उठे: **"ऐ सारिया... पहाड़!"** और सारिया सैकड़ों मील दूर एक सेना के सेनापति थे। जब सेना लौटी तो उन्होंने कहा: हमने उमर की आवाज़ सुनी, तो हमने पहाड़ की ओट ली, और हम जीत गए।

उस समय लोग क्या मानते थे?

मदीना और युद्धभूमि के बीच ऊँटों पर सन्देशवाहकों के सिवा कोई सम्पर्क का साधन न था, और वे हफ़्तों लेते। ख़ुतबा मदीना के सारे लोगों के सामने दिया जा रहा था। और लोगों ने वह पुकार सुनी, उसे अजीब पाया, और उस समय उसका अर्थ नहीं समझ सके।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह ख़बर बैहक़ी ने "दलाइलुन-नुबूवा" में, इब्न असाकिर ने "तारीख़ दिमश्क़" में, अबू नुऐम, इब्नुल-असीर और दूसरों ने कई सनदों से रिवायत की। कई विद्वानों ने उसे उसकी सनदों के जोड़ से हसन ठहराया, और इब्न हजर, इब्न कसीर तथा इब्न तैमिया ने उसका ज़िक्र किया। यह पहुँचाई गई **सहाबा की करामतों** में सबसे प्रसिद्ध में है। और इसके समकक्ष स्थापित हैं: **अला बिन अल-हज़रमी** और उनकी सेना का दारीन की खाड़ी को पानी के ऊपर से पार करना; **ख़ालिद बिन वलीद** का ज़हर पीना और उससे कोई हानि न होना; और **साद बिन अबी वक़्क़ास** की दुआओं का क़बूल होना नबी ﷺ की उनके लिए की गई दुआ से।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

चमत्कार और करामत के बीच का भेद यहाँ एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। चमत्कार किसी नबी के साथ चुनौती और नुबूवत के प्रमाण के रूप में होता है; करामत किसी नेक व्यक्ति के साथ **बिना किसी चुनौती और बिना किसी दावे के** होती है। इसीलिए करामत न माँगी जाती है न उस पर गर्व किया जाता है, और जिसे वह मिले वह उस पर कोई दावा नहीं खड़ा कर सकता। और जो उसे ढूँढ़े और उससे रोज़ी कमाए वह उससे सबसे दूर का व्यक्ति है। और यही सिद्धान्त इस्लाम को उस हर चीज़ से अलग करता है जो आज "आध्यात्मिक ऊर्जा", "फ़तह" और "कश्फ़" के नामों से बेची और ख़रीदी जाती है। और जब उमर से उनकी पुकार के बारे में पूछा गया तो उन्होंने मुँह फेर लिया और कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया — और करामत वालों का उसके प्रति यही रुख़ होता है।

एक अनिवार्य भेद

135 हर बीमारी आसेब नहीं है

ऐ अल्लाह के बन्दो, इलाज कराओ, क्योंकि अल्लाह ने कोई बीमारी ऐसी नहीं रखी जिसके लिए उसने कोई दवा न रखी हो, सिवाय एक बीमारी के: बुढ़ापा।

अबू दाऊद और तिर्मिज़ी की रिवायत — सहीह

पहले: चिकित्सक के पास जाइए	फिर शरई रुक़्या
• शारीरिक मिर्गी	• क़ुरआन पढ़ा जाए, बिना बढ़ी-चढ़ी फ़ीस के
• विटामिन की कमी	• न कोई अनुष्ठान न कोई धूप-लोबान
• ग्रन्थि का विकार	• न नाम पूछा जाए न माँ का नाम
• जानी-मानी मानसिक बीमारियाँ	• किसी स्त्री के साथ एकान्त नहीं
• नींद की कमी और थकान	• और रोगी स्वयं अपने ऊपर पढ़े

जो इन नियमों को तोड़े वह ठग है, रुक़्या करने वाला नहीं

सही क्रम: पहले चिकित्सा, फिर रुक़्या अपनी सीमाओं के भीतर

सीधी-सादी बात में

इस्लाम ने आसेब और जादू की पुष्टि की, **पर उसने हर बीमारी को उनमें से नहीं ठहराया**। उसने पहले इलाज का हुक्म दिया, और क़ुरआन की तिलावत को ऐसी चीज़ बनाया जिसे बीमार स्वयं अपने ऊपर पढ़ता है, बिना किसी बिचौलिए के, बिना फ़ीस के और बिना अनुष्ठानों के।

उस समय लोग क्या मानते थे?

इस्लाम से पहले क़ौमें अधिकतर बीमारियों को आत्माओं और शैतानों से जोड़ती थीं, तो बीमारों का इलाज अनुष्ठानों, जिन्नों के लिए बलियों और तावीज़ों से किया जाता था। और यह यूरोप में सदियों चलता रहा, यहाँ तक कि सत्रहवीं सदी में स्त्रियों को जादूगरनी के आरोप में जलाया जाता रहा। और मानसिक रोगियों के साथ आसेब-ग्रस्तों जैसा सलूक किया जाता था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

नबी ﷺ ने इलाज का स्पष्ट हुक्म दिया और कहा: "**हर बीमारी की एक दवा है**"; उन्होंने शहद, पछना और कलौंजी इस्तेमाल की, और अपने साथियों के लिए निश्चित दवाएँ बताईं। उन्होंने कहा: "शिफ़ा तीन चीज़ों में है: शहद का एक घूँट, पछना लगाने वाले का चीरा, और आग से दाग़ना।" और उन्होंने साद बिन अबी वक़्क़ास के इलाज के लिए **एक चिकित्सक** भेजा। रही रुक़्या, तो विद्वानों ने उसके लिए तीन शर्तें रखीं: कि वह अल्लाह के शब्दों या उसके नामों से हो, समझ में आने वाली अरबी में हो, और उसे एक साधन माना जाए, अपने आप में कोई कर्ता नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यही सिद्धान्त लोगों को दो बड़ी हानियों से बचाता है। पहली: **किसी शारीरिक बीमारी का चिकित्सकीय इलाज छोड़ देना** इस धारणा में कि वह आसेब है — और इसने बहुतों की जान ली है। दूसरी: **ठगों के हाथों में पड़ जाना** जो डर का फ़ायदा उठाकर पैसा और इज़्ज़त दोनों लूट लेते हैं। इसीलिए नबी ﷺ यहाँ अत्यन्त कड़े रहे: "**जो किसी भविष्यवक्ता के पास जाए और उससे कुछ पूछे, उसकी चालीस रातों की नमाज़ क़बूल नहीं होगी**", और "**जो किसी काहिन के पास जाए और जो वह कहे उसे सच माने, उसने उसका इनकार किया जो मुहम्मद पर उतारा गया**"। तो जो दरवाज़ा एक वास्तविकता की पुष्टि के लिए खोला गया था **उसे शोषण के आगे कसकर बन्द कर दिया गया**। और जो भी रुक़्या करने वाला तुमसे तुम्हारा नाम और तुम्हारी माँ का नाम पूछे, या कोई जानवर, कोई निजी चीज़ या कोई बड़ी रक़म माँगे, वह ठीक वही ठग है जिससे नबी ﷺ ने चेताया।

इतिहास की गवाही

136 हर क़ौम ने इस संसार को जाना है

और जिस दिन वह उन सबको इकट्ठा करेगा: ऐ जिन्नों के गिरोह, तुमने मनुष्यों में से बहुतों को अपना बना लिया। और मनुष्यों में से उनके साथी कहेंगे: ऐ हमारे रब, हमने एक-दूसरे से फ़ायदा उठाया।

सूरह अल-अनआम — आयत 128

एक सार्वभौमिक मानवीय परिघटना, जिसकी कोई पूरी सांस्कृतिक व्याख्या नहीं

ऐसी क़ौमें जिन्हें न समय ने जोड़ा न स्थान ने न भाषा ने... और वे सहमत निकलीं

एक अदृश्य, बुद्धिमान संसार में विश्वास हर ज्ञात सभ्यता में मौजूद है

सीधी-सादी बात में

इतिहास की हर क़ौम — बाबुल, मिस्र, यूनान, भारत, चीन तथा अफ़्रीक़ा और अमेरिका की क़ौमें — **बुद्धिमान, अदृश्य जीवों** के अस्तित्व को जानती थीं, और उन्हें अलग-अलग नाम देती थीं।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ये क़ौमें एक-दूसरे से बहुत दूर थीं और एक-दूसरे को जानती ही न थीं; उनकी न कोई साझा भाषा थी न कोई व्यापार। फिर भी उनकी धारणाएँ चौंकाने वाली हद तक मिलती-जुलती थीं: बुद्धिमान जीव, खंडहरों और जंगलों में बसने वाले, हानि और मदद करने वाले, चढ़ावों से ख़ुश किए जाने वाले, कुछ नेक और कुछ बिगड़े हुए।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मानवशास्त्री इसे **सांस्कृतिक सार्वभौमिक** कहते हैं: ऐसी परिघटना जो बिना किसी अपवाद के हर ज्ञात समाज में प्रकट होती है। और बुद्धिमान आत्मिक जीवों में विश्वास इसकी सबसे स्पष्ट मिसालों में है, और जॉर्ज मर्डक ने अपनी प्रसिद्ध सांस्कृतिक सार्वभौमिकों की सूची में इसे दर्ज किया। उनके नाम: बाबुल में "शेदु", मिस्र में "आख़ू", यूनानियों में "दाइमोन", भारत में "भूत", और अरबों में "जिन्न"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह यहाँ अपने आप में कोई निर्णायक प्रमाण के रूप में पेश नहीं किया जा रहा — अकेली सहमति सत्य स्थापित नहीं करती। पर यह **उस आम व्याख्या को रद्द कर देता है** कि जिन्न कोई अरबी अन्धविश्वास हैं जिसे क़ुरआन ने अपने माहौल से उधार लिया। यह परिघटना अरबों से हज़ारों वर्ष पुरानी है और उनसे कहीं आगे पूरे महाद्वीपों में फैली हुई है। और इससे भी सूक्ष्म बात: क़ुरआन ने **प्रचलित धारणा को आगे नहीं बढ़ाया, बल्कि उसे सुधारा**: सारी क़ौमें इन जीवों की पूजा करती थीं और उन्हें बलियाँ चढ़ाती थीं, और उसने इससे रोका और उसे शिर्क कहा; वे उन्हें ग़ैब का ज्ञान देती थीं, और उसने उसका निश्चित इनकार किया; वे उन्हें आधे देवता बनाती थीं, और उसने उन्हें **एक उत्तरदायी सृष्टि बनाया जिनका हिसाब वैसे ही होगा जैसे हमारा**। अस्तित्व के तथ्य में सहमति और हुक्म में पूरा मतभेद — और यही किसी सुधारक की निशानी है, किसी उधार लेने वाले की नहीं।

137 पाँच चीज़ें जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता

निस्सन्देह अल्लाह ही के पास क़ियामत का ज्ञान है और वही वर्षा उतारता है और जानता है जो गर्भाशयों में है। और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह कल क्या कमाएगा, और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह किस भूमि में मरेगा।

सूरह लुक़मान — आयत 34

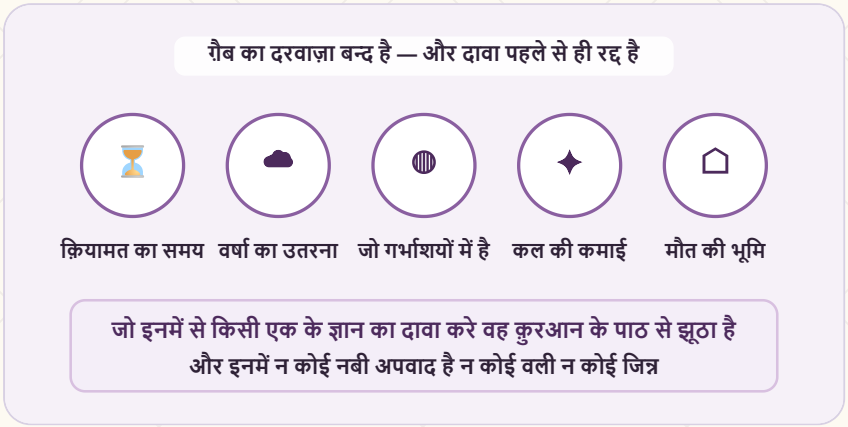

सीधी-सादी बात में

इस भाग में जो कुछ गुज़रा उसके बाद क़ुरआन दरवाज़ा कसकर बन्द कर देता है: **पाँच चीज़ें हैं जिन्हें अकेला अल्लाह ही जानता है**। तो जो इनमें से किसी के ज्ञान का दावा करे — वह जो भी हो — वह झूठा है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

भविष्यकथन, ज्योतिष, नक्षत्र-विद्या और राशिफल हर सभ्यता में फलते-फूलते पेशे थे। भविष्यवक्ता से ग़ैब के बारे में पूछा जाता और वह जवाब देता, और कभी-कभी निशाना बैठ जाता तो उसकी हैसियत और बढ़ जाती। ये आमदनी और प्रभाव के बड़े स्रोत थे।

आज विज्ञान क्या कहता है?

ये पाँचों स्वयं आयत में नाम लेकर बताई गई हैं, और नबी ﷺ ने जिब्रील वाली हदीस में उन्हें **ग़ैब की पाँच कुंजियाँ** बताया (बुख़ारी की रिवायत)। और ध्यान दीजिए कि ये कोई धुँधली, अस्पष्ट बातें नहीं, बल्कि **परीक्षा के लिए खुली** हैं: इतिहास में कोई भी न क़ियामत का दिन तय कर सका, न निश्चय के साथ यह कह सका कि वर्षा होगी (पूर्वानुमान सम्भावनाएँ देते हैं, निश्चय नहीं), और न यह जान सका कि गर्भाशय में क्या है **पूरा-पूरा** — उसका भाग्य, रोज़ी, आयु और कर्म। रही अल्ट्रासाउंड से लिंग जान लेना, तो वह बन जाने के बाद जो प्रकट हो चुका उसे देखना है, उससे पहले का ग़ैब जानना नहीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह सीमा इस पूरे भाग का **सुरक्षा-वाल्व** है। जो कुछ पहले गुज़रा — जिन्नों, जादू, नज़र और करामतों की पुष्टि — वह ठगी और शोषण का एक चौड़ा दरवाज़ा खोल सकता था। तो यह आयत आई कि हर दावेदार के आगे पहले ही रास्ता काट दे: **जो तुम्हें तुम्हारा कल बताए वह झूठा है**, चाहे वह दूसरी बातों में कितना ही सच्चा लगे। और स्वयं नबी ﷺ को हुक्म दिया गया कि वे यह अपने बारे में घोषित करें: "**कह दो: मैं अपने लिए भी न किसी लाभ का अधिकार रखता हूँ न हानि का, सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे। और यदि मैं ग़ैब जानता होता तो बहुत भलाई बटोर लेता**।" तो जो इस दीन को लाए उन्होंने **सबसे पहले अपने बारे में उसका इनकार किया** जिसका दावा उनके समय के भविष्यवक्ता करते थे। और कोई दावेदार जो अधिकार चाहता हो ऐसा नहीं करता।

138 आपका दैनिक क़िला — ऐसे शब्द जिनकी कोई क़ीमत नहीं

जो कोई शाम को कहे: मैं अल्लाह के पूर्ण शब्दों की पनाह माँगता हूँ उस हर चीज़ की बुराई से जो उसने बनाई — उस रात उसे कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचाएगी।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

सहीह संग्रहों में स्थापित चार ज़िक्र, जो बाक़ी हर चीज़ से बेनियाज़ कर देते हैं

सीधी-सादी बात में

व्यक्ति को इस संसार के सामने निहत्था नहीं छोड़ा गया। नबी ﷺ ने उसे **छोटे-छोटे ज़िक्र दिए जिन्हें एक बच्चा याद कर ले**, जिन्हें वह स्वयं कहता है, बिना किसी बिचौलिए के, बिना पैसे के और बिना अनुष्ठानों के।

उस समय लोग क्या मानते थे?

जिन्नों और ईर्ष्या से सुरक्षा के लिए **एक बिचौलिया** चाहिए होता था: कोई भविष्यवक्ता, कोई जादूगर, या कोई ताबीज़ बाँटने वाला। लोग उसके लिए पैसा और बलियाँ देते थे, और ऐसी चीज़ों से चिपके रहते थे जिन्हें वे अपने बच्चों और अपने जानवरों पर लटकाते। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जो परावलम्बन और डर पैदा करती थी और उसे चलाने वालों को नफ़ा पहुँचाती थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

सहीह संग्रहों में स्थापित ज़िक्र बहुत हैं; सबसे प्रसिद्ध ये हैं: सोते समय **आयतुल-कुर्सी** — "तुम पर अल्लाह की ओर से एक निगरान बना रहेगा और कोई शैतान तुम्हारे पास नहीं आएगा"; सुबह-शाम तीन-तीन बार **मुअव्विज़तैन और सूरह इख़्लास** — "वे तुम्हें हर चीज़ से बचाने को काफ़ी होंगी"; **"मैं अल्लाह के पूर्ण शब्दों की पनाह माँगता हूँ उस हर चीज़ की बुराई से जो उसने बनाई"** — "उस रात उसे कोई चीज़ हानि नहीं पहुँचाएगी"; **घर में दाख़िल होते और खाने पर अल्लाह का नाम लेना** — "तुम्हारे लिए न कोई ठिकाना है न रात का खाना"; और घर में **सूरह अल-बक़रह** पढ़ना — "उसमें कोई शैतान दाख़िल नहीं होता"।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

उस ढाँचे को देखिए जो इस दीन ने खड़ा किया, और उसकी तुलना उससे कीजिए जो पहले था। उसने सुरक्षा को **बिचौलिए की इजारेदारी** से हटाकर **हर व्यक्ति के अपने क़ब्ज़े** में दे दिया। मुसलमान को न किसी रुक़्या करने वाले की ज़रूरत है, न भविष्यवक्ता की, न ताबीज़ की, न किसी फ़ीस की — बस कुछ शब्द जिन्हें वह याद कर लेता है और स्वयं कहता है, और जो ग़रीब की पहुँच में उतने ही हैं जितने अमीर की। और यह ठगी की अर्थव्यवस्था को उसकी बुनियाद से ढा देता है, और उसकी जगह कोई वैकल्पिक अधिकार भी नहीं बिठाता। और ध्यान दीजिए कि ये सारे ज़िक्र **अल्लाह की पनाह माँगना हैं, जिन्नों या नामों की नहीं** — तो वे ठीक उसी क्षण तौहीद सिखाते हैं जिस क्षण वे रक्षा करते हैं। और यही जायज़ रुक़्या और बाक़ी हर चीज़ के बीच का असली अन्तर है।

इस भाग का सार

139 इस मामले में तराज़ू

और मनुष्यों में से कुछ लोग जिन्नों में से कुछ की पनाह माँगते थे, तो उन्होंने उनका बोझ और बढ़ा दिया।

सूरह अल-जिन्न — आयत 6

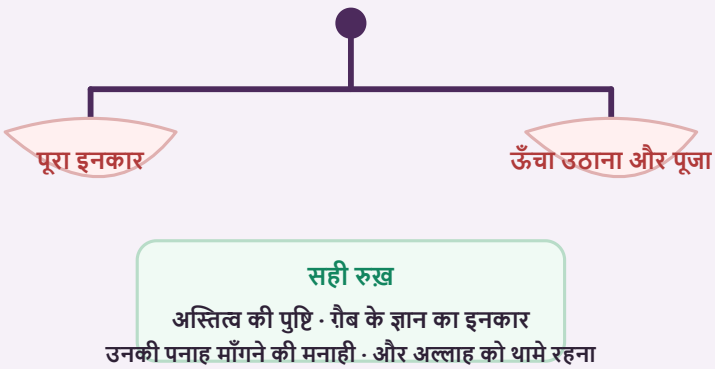

एक ऐसे इनकार के बीच जो वह्य को झुठला दे और ऐसी ऊँचाई के बीच जो शिर्क तक ले जाए

सीधी-सादी बात में

ग़ैब का संसार एक वास्तविकता है, पर उससे निपटने का **एक सूक्ष्म तराज़ू** है: हम न उसका इनकार करें कि जो अल्लाह ने हमें बताया उसे झुठला बैठें, और न उसे इतना ऊँचा उठाएँ कि शिर्क, डर और ठगी में जा पड़ें।

उस समय लोग क्या मानते थे?

पुराने ज़माने के लोग एक अति में गिरे: ऊँचा उठाना, पनाह माँगना, बलियाँ और भविष्यकथन। और आज बहुत-से लोग दूसरी अति में गिरते हैं: उस हर चीज़ का इनकार जिसे आँख न देखे। और दोनों अतियाँ ग़लत हैं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

क़ुरआन और सुन्नत ने जो रुख़ स्थापित किया वह पाँच ऐसे सिद्धान्त इकट्ठे करता है जो एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते: **उनके अस्तित्व की पुष्टि** — यह ग़ैब पर ईमान का हिस्सा है; **उनसे ग़ैब का ज्ञान छीन लेना** — तो न कोई भविष्यकथन न कोई ज्योतिष; **उनकी पनाह माँगने की मनाही** और उसे शिर्क ठहराना; **इलाज कराने का हुक्म** और दवा को अनुमान पर वरीयता देना; और **अल्लाह के ज़िक्र से सुरक्षा**, बिना बिचौलिए के, बिना फ़ीस के और बिना अनुष्ठानों के।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह पूरी व्यवस्था अपने समग्र रूप में ही प्रमाण है। यदि यह दीन उस माहौल के किसी व्यक्ति का काम होता, तो उसके लिए सबसे आसान — और सबसे नफ़े वाली — बात यही थी कि वह भविष्यकथन की प्रचलित लहर पर सवार हो जाता: ग़ैब का दावा अपने लिए करता, अपने अनुयायियों को एक बिचौलिया देता जिससे उन्हें रोज़ी मिलती, और लोगों के अनजान के डर पर एक आध्यात्मिक अधिकार खड़ा कर लेता। और बहुत-सी क़ौमों में धार्मिक संस्थाओं ने यही किया। पर जो इस दीन को लाए उन्होंने ठीक इसका उलटा किया: उन्होंने **अपने लिए ग़ैब के ज्ञान का इनकार किया**, **भविष्यकथन और ताबीज़ मिटा दिए**, **हथियार हर व्यक्ति के हाथ में मुफ़्त दे दिया**, और **रुक़्या करने वाले से पहले चिकित्सक का हुक्म दिया**। जो ऐसा करता है वह अपने लिए कोई अधिकार नहीं बना रहा — वह एक सन्देश पहुँचा रहा है जो उसे सौंपा गया है।